AGPE THE ROYAL GONDWANA RESEARCH JOURNAL
OF HISTORY, SCIENCE, ECONOMIC, POLITICAL AND SOCIAL SCIENCE
ISSN (E): 2583-1348 | A Peer reviewed | Open Access & Indexed
Volume 06 | Issue 01 | January 2025 | www.agpegondwanajournal.co.in | Page No. 39-43

भारतीय इतिहास में किन्नर

डॉ. रामानुज प्रताप सिंह धुर्वे
सहायक प्राध्यापक (इतिहास विभाग)
शासकीय बा.सा.दे. महा. कुनकुरी जशपुर(छ.ग.)

प्रस्तावना

इतिहास में जब मानवीय क्रियाकलापों का अध्ययन किया जाता है तो संपूर्ण मानव समाज को नर व मादा के रूप में विभक्त किया जाता है समाज में एक तबका और है, जिसकी विशेष चर्चा नहीं होती लेकिन प्रकृति ने हीं उसे मानव स्वरूप में ढाला है और वह है किन्नर जिसे ट्रांसजेंडर के रूप में भी जाना जाता है। भारत में किन्नरों को विभिन्न क्षेत्रों में विभिन्न नामों जैसे छक्का, हिजड़ा, खवाजासरस, नपुंसक आदि नामों से भी जाना जाता है। भारतीय इतिहास में किन्नर के प्राचींनतम साक्ष्य की बात करें तो ईसा पूर्व नवीं शताब्दी में मिलता है। भारत के प्राचीन धर्म हिंदू व जैन धर्म में भी तीन लिंगों की मान्यता दी गई है। इतिहास के रंगमंच पर किन्नर समुदाय का अस्तित्व वैदिक काल से ही है परंतु वर्तमान समय तक भी वे अपनी मुखर अभिव्यक्ति नहीं दे पाये हैं।

किन्नर की परिभाषा

समाज में जो पूर्ण रूप से ना तो पुरुष है ना तो पूर्ण रूप से महिला यह ऐसे मानव होते हैं जिनमें स्त्री व पुरुष दोनों के लक्षणों का समावेश होता है। भारत में किन्नरों के लिये हिजड़ा व छक्का शब्द का भी प्रयोग किया जाता है।

किन्नर का अर्थ

किन्नर का शब्दिक अर्थ है कीम्नर अर्थात कैसा नर। भारत में किन्नरों के लिये हिजड़ा शब्द का भी प्रयोग किया जाता है हिजड़ा का तात्पर्य है वह पुरुष जिसने देवताओं कि उपासना के लिये अपने पुरुषत्व का त्याग किया हो और स्वयं को देवताओं कि भक्ति में रमा लिया हो। हिजड़ा शब्द फारसी भाषा से हिंदी भाषा में आया है और यह शब्द मध्यकाल में ज्यादा प्रचलित में था। भारत में प्रचलित एक और शब्द है किम् पुरुष इसका अर्थ भी है कैसा पुरुष।[1]

CORRESPONDING AUTHOR:	RESEARCH ARTICLE
Dr. Ramanuj Pratap Singh Dhurve Asst. Professor - Dept. of History Govt. Bala Saheb Deshpande College, Kunkuri, Dist. Jashpur , Chattisgarh Email: r4ramanuj.singh@gmail.com	

भारतीय जनश्रुतियों में किन्नर

भारतीय इतिहास में रामायण व महाभारत की ऐतिहासिकता हमेशा से विवादित रही है परंतु यह भी सत्य है कि रामायण व महाभारत भारत के प्राचिनतम ऐतिहासिक काव्य है संपूर्ण महाभारत में 1,10,000 श्लोक हैं। जिसमें हिंदू धर्म परंपरा व भारतीय मूल्यों का संकलन है। भाइयों की आपसी वैमनस्यता, से परिपूर्ण यह गाथा भारत की तत्कालीन , भारतीय सामाजिक व्यवस्था का चित्रण भी करती है। महाभारत कालीन समाज में अगर हम किन्नरों की स्थिति पर गौर करें तो हम देखेंगे की तत्कालीन समय में किन्नरों की स्थिति अच्छी थी। महाभारत की कथा में हमें दो प्रमुख किन्नर पात्रो की जानकारी प्राप्त होती है।

महाभारत की कथा में पहला प्रमुख किन्नर पात्र अर्जुन द्वारा अज्ञातवास के समय धारण किया गया वृहन्नला के रूप में वर्णित है। ऐसा माना जाता है कि जब अर्जुन इंद्रलोक में नृत्य और गायन की शिक्षा ले रहे थे तब इन्द्रलोक की रूपवति अप्सरा उर्वशी अर्जुन पर मोहित हो हो गयी, उर्वशी द्वारा अर्जुन के समक्ष विवाह का प्रस्ताव रखा गया जिसे अर्जुन ने ठुकरा दिया। उर्वशी अपना यह अपमान बर्दाश्त नहीं कर सकी और उन्होंने अर्जुन को एक वर्ष तक किन्नर बनने का श्राप दे दिया। देवराज इन्द्र के कहने पर उर्वशी ने यह एक वर्ष का समय अर्जुन पर छोड दिया। पांडवों को जब अज्ञातवास में जाना पड़ा तब अर्जुन एक किन्नर वृहन्नला के रूप में विराट नगर में रहने लगे वहाँ उन्होंने विराटनगर के राजा उनकी पुत्री को नृत्य संगीत की शिक्षा दी।[2]

महाभारत की कथा में दूसरा प्रमुख किन्नर पात्र शिखंडी के रूप में विद्यमान हैं। महाभारत की कथा के अनुसार शिखंडी पूर्व जन्म में काशीनरेश की पुत्री अंबा थीं। जिसका अपहरण भीष्म पितामह ने किया था। शिखंडी पुर्नजन्म के समय राजा द्रुपद के यहाँ पैदा हुई थी। शिखंडी ने स्त्री के रूप में जन्म लिया था एक यक्ष ने शिखंडी की सहायता करने के लिए अपना पुरुषत्व उसे प्रदान कर दिया एवं उसका स्त्रीत्व स्वयं ग्रहण कर लिया था।[3] इस कथा से स्पष्ट रूप से पता चलता है की शिखंडी स्त्री से पुरुष बना था यह शिखंडी के ट्रांसजेंडर स्वरूप को व्यक्त करता है। शिखंडी का पात्र महाभारत की कथा में विशेष महत्त्व रखता है। भीष्म पितामह ने स्त्रियों पर कभी भी शस्त्र नहीं उठाने की प्रतिज्ञा ली हुई थी। शिखंडी एक स्त्री ही था जो बाद में पुरुष वेश धारण कर रहने लगा था इस वजह से अर्जुन ने शिखंडी को आगे कर भीष्म पितामह पर बांण चलाएं और भीष्म पितामह को बाणों की संख्या पर लिटा दिया जहाँ उनकी मृत्यु हुई।[4]

महाभारत की कथा को देखे तो भारतीय समाज में हमें किन्नरों की अच्छी स्थिति का पता चलता है वृहन्नला का विराटनगर के दरबार में नौकरी करना यह बतलाता है कि तत्कालीन समय में किन्नरों की प्रतिभा का भी सम्मान होता था। इसी प्रकार शिखंडी द्वारा भीष्म पितामह पर बांण चलाना यह दर्शाता है कि किन्नर नृत्य संगीत ही नहीं वरन युद्ध कला में भी पारंगत होते थे।

रामायण की कथा में भी हमें किन्नर समुदाय की जानकारी प्राप्त होती है भगवान राम जब 14 वर्ष के वनवास के लिए प्रस्थान करते हैं तो अयोध्या की जनता उन्हें छोड़ने आती है जहाँ पर वह जनता को वापस लौटने को कहते हैं परन्तु 14 वर्षों के वनवास के बाद जब वापस आते हैं तो किन्नरों को वही उनका इंतजार करते हुए पाते हैं राम ने जब इसका कारण जानना चाहा तो किन्नरों ने कहा कि राम ने स्त्री व पुरुषों को अयोध्या लौटने का आदेश दिया था किंतु किन्नरों को नहीं। यह कथा संस्कृत ही सही रामायण काल में भी किन्नर समुदाय के अस्तित्व को दर्शाती है।

मध्यकाल में किन्नरों की स्थिति

भारतीय भारतीय मध्यकाल किन्नर समुदाय की सामाजिक स्थिति के लिए स्वर्णकाल था मुस्लिम शासकों के काल में किन्नरों ने अति शीघ्रता से सामाजिक व आर्थिक उन्नति की थी मुस्लिम शासकों को

गुलाम रखने का अत्यंत शौक था। मुस्लिम शासकों के गुलामों में हिजड़ों या किन्नर समुदाय का विशेष स्थान था। अपने आलीशान हरम के लिए जाने जाते थे। पूरी तरह किन्नरों पर रहता था। मैं आने जाने वाले प्रत्येक नागरिक को के सुरक्षा जांच भी करते थे। भारतीय मुस्लिम शासकों की सुरक्षा में भी हिजड़ों की नियुक्ति ओके प्रमाण मिलते हैं। भारतीय मध्यकाल में किन्नरों के सुव्यवस्थित पदानुक्रम की जानकारी प्राप्त होती है सबसे शक्तिशाली किन्नर को नजीर या ख्वाजा सरस के नाम से जाना जाता था।

दिल्ली सल्तनत में किन्नरों की स्थिति

मध्यकालीन इतिहास में मध्यकालीन इतिहास में 1206 ईस्वी से 1526 ईस्वी तक का समय दिल्ली सल्तनत का काल कहलाता है। दिल्ली सल्तनत ने सवर्प्रथम किन्नरों को सत्ता के शिखर पर पहुँचने का पहला मौका उपलब्ध कराया। दिल्ली सल्तनत में नसीरुद्दीन महमूद की वजीर इम मधु तीन रेहान, अलाउददीन खिलजी के गुलाम मलिक काफूर हल्केराम वह जौनपुर के सर की राजवंश के नींव डालने वाले मलिक सरवर प्रमुख किन्नर थे जिन्होंने सत्ता के शिखर को छूने में सफलता प्राप्त की और भारतीय इतिहास में अपना नाम दर्ज कराया।

इमादउद्दीन रेहान इमादउद्दीन रेहान बलबन के काल का सबसे प्रतिष्ठित किन्नर था। इमादउद्दीन रेहान एक हिंदू था जो बाद में मुस्लिम धर्म में परिवर्तित हो गया था। इल्तुतमिश के पुत्र नसीरुद्दीन महमूद के काल में इमादउद्दीन रेहान ने अपनी कूटनीतिक प्रतिभा को दिखाते हुए बलबन को अपदस्थ कर 1253–54 में सुल्तान नसीरुद्दीन महमूद के प्रधानमंत्री का पद ग्रहण किया।

इमादउद्दीन रेहान ने बलवंत के प्रति सुल्तान की नाराजगी का लाभ उठाया और एक नवीन गुट का निर्माण कर बलबन को अपदस्थ कर दिया। इमामुद्दीन देहांत के गुट में भारतीय मुसलमानों के अलावा दलित चालिसा चिहल गानी के भी कुछ सदस्य सम्मिलित थे जो बलबन से अप्रसन्न थे। इमामुद्दीन देहांत का सुल्तान नसीरुद्दीन महमूद का प्रधानमंत्री बनना भारतीय मुसलमान वो भी विशेषकर एक किन्नर का इतने बड़े पद को सुशोभित करना एक अप्रत्याशित घटना थी। इमामुद्दीन रेहान ज्यादा समय तक प्रधानमंत्री का पद संभाल न सका, अंत में उसके अत्याचारों से तंग आकर पूना बलवंत को प्रधानमंत्री पद पर नियुक्त कर दिया गया। प्रसिद्ध इतिहासकार के एल श्रीवास्तव ने उसकी प्रतिभा को सम्मान देते हुए कहा है ठीक वह एक कुशल राजनीतिज्ञ था।

सल्तनत कालीन भारत का सर्वाधिक प्रसिद्ध किन्नर मलिक काफूर था। मलिक काफूर जिसे अलाउदीन खिलजी ने 1000 दीनार में खरीदा था इसलिए उसे 1000 दिनारी भी कहा जाता था। अलाउदीन खिलजी के सबसे प्रमुख सेनापतियों में से मलिक कफूर एक था। किन्नर होने के बावजूद मलिक काफूर अपनी प्रतिभा के दम पर अलाउदीन खिलजी के प्रमुख अमीरों में स्थान बना लिया था। अलाउददीन खिलजी के समृद्ध शासनकाल में दक्षिण भारत से आए धन का विशेष महत्त्व था। इस धन ने खिलजी वंश को मजबूती प्रदान की थी। 1299 ई. में खिलजी सेना में शामिल होने के बाद 1307 ई. के दक्कन अभियान में मुख्य सेनापति के रूप में उसनें भूमिका निभाई। मलिक काफूर के नेतृत्व में खिलजी सेनाओं ने 1307 ई. में देवगिरी के यादव वंश, 1309 में काकतीय वंश, 1311 में होयशाल फिर पांडय वंश को पराजित कर दिल्ली सल्तनत का विस्तार दक्षिण भारत तक कर दिया।[5] वारंगल अभियान में ही मलिक काफूर को विश्व प्रसिद्ध कोहिनूर हीरा प्राप्त हुआ था। समकालीन इतिहासकारों का मत है कि अगर अलाउददीन खिलजी की तबियत खराब ना हुई होती तो मलिक काफूर दक्षिण भारत में एक स्वतंत्र राज्य स्थापित कर सकता था। अलाउददीन खिलजी की बीमारी की सूचना पाकर उसे दिल्ली आने को विवश होना पड़ा। अलाउददीन के अंतिम समय मलिक काफूर की स्थिति बहुत सुदृढ़ थी। सारे प्रशासनिक फैसले वह स्वयं लेता था। एक किन्नर का इस प्रकार नियंत्रण स्थापित करने का

उदाहरण विरले हीं मिलते हैं। इसामी बरनी जैसे इतिहासकारों ने स्पष्ट लिखा है कि अलाउद्दीन खिलजी की मृत्यु के बाद सारी सत्ता मलिक काफूर के नियंत्रण में थी।

सल्तनतकालीन किन्नरों में जिसने भारतीय इतिहास की दिशा को बदल के रख दिया वह थे मलिक सरवर। मलिक सरवर जिसने किन्नर होने के बावजूद एक स्वतंत्र राज्य स्थापित करने में सफलता पाई थी। तैमूर के आक्रमण के पश्चात् उत्पन्न होने वाली अव्यवस्था से लाभ उठा कर स्वतंत्र होने वाले राज्यों में जौनपुर पहला राज्य था। मालिक सरवर को सुल्तान महमूद ने मालिक उस सर्क (पूर्व का स्वामी) की उपाधि दी थी। मलिक सरवर द्वारा स्थापित वंश उसके नाम से ही शर्की राजवंश कहलाया। मालिक उस सरवर द्वारा स्थापित राज्य कन्नौज से बिहार तक विस्तारित था। जाजनगर व लखनौती के राजाओं ने मलिक उस सर्क को भेंट स्वरूप उपहारें प्रदान की थी, जो मलिक उस सर्क की शक्ति को दर्शाता है। इसके द्वारा स्थापित राज्य 1394 ई. से 1469 ई. तक बना रहा। शर्की राजवंश अपने सुंदर स्थापत्य कला के लिए प्रसिद्ध है इनके राज्य में हिंदू मुस्लिम स्थापत्य कला का सुंदर मिश्रण अस्तित्व में आया जिसने बाद के दिनों में मुगल काल में अत्यंत लोकप्रियता हासिल की।[6]

मुगल काल में किन्नरों कि स्थिति

मुगल काल में भी किन्नरों कि स्थिति अच्छी थीं मुगलकाल के प्रमुख लेखक अबुल फजल अपनी पुस्तक अकाबरनामा जो मुगल भारत के बारे में जानकारी का एक प्रमुख प्राथमिक स्रोत है, में बताते है कि मुगल काल कि सभी साजिशें और विद्रोह किन्नर दास वर्ग के माध्यम से हुईं। फ्रांसीसी यात्री फ्रेंकोइस बर्नियर, जो औरंगजेब के काल में भारत आया था नें अपनी किताब में मुगल हरम कि जो जानकारी प्रदान कि है उसका स्रोत हरम के हिजड़े दास ही थे।

मुगल काल में हरम कि सुरक्षा दरबार के अलावा कुलीन वर्ग में स्थान के साथ साथ हिजड़े दासो को बड़ी जिम्मेदारियां भी प्रदान कि गयी थीं। अकबर नें अपने शासनकाल में बाबर के विश्वस्त प्रिय दास येतबार खान को दिल्ली का राज्यपाल बनाया था। जबकि वह समय मुगल सत्ता के लिहाज से अहम् समय था। जहांगीर के शासनकाल में जब अब्दुल्ला खान को गुजरात प्रांत का सूबेदार बनाया गया तो अब्दुल्ला खान नें स्वयं ना जा कर गुजरात के प्रशासन को अपने सबसे विश्वस्त ख्वाजासार वफादार (वफादार हिजड़ा) को भेजा, जबकि गुजरात भारतीय उपमहाद्वीप के पश्चिमी तट पर स्थिति सामरिक व व्यावसायिक महत्व का स्थान था। इसी प्रकार दारा शिकोह ने भी अपने एक ख्वाजसरा को अटक किले का गवर्नर नियुक्त किया था । सिंधु नदी के किनारे स्तिथ अटक का विशेष समरिक महत्व था। ऐसा बिल्कुल नहीं है कि किन्नरों नें सिर्फ मुगलों कि अधीनता ही स्वीकार कि हो ऐसे कई उदाहरण मिलते है जब किन्नरों नें मुगल राजकुमारों के आदेशों को मानने से मना कर दिया। इतिबार खान जहांगीर के सबसे करीबी विश्वासपात्रों में से एक किन्नर दास था। शाहजहाँ, के विद्रोह के समय उसने आगरा कि सफलतापूर्वक रक्षा कि थीं यह उदाहरण स्पष्ट रूप से दिखाते हैं कि राजनीतिक सत्ता के खेल और साम्राज्य के प्रशासनिक कर्तव्यों के साथ साथ हरम कि विभिन्न गतिविधियों में किन्नरों नें स्पष्ट भागीदारी कि थीं।[7]

आधुनिक काल में किन्नरों की स्थिति में व्यापक बदलाव हुए। विभिन्न सामाजिक मूल्यों में परिवर्तन साथ ही भारत में राजनीतिक सत्ता के हस्तांतरण के परिणामस्वरूप दास व सेवक के रुप में किन्नर लोगों की भूमिका में कमी आई ,जिसके परिणाम स्वरुप किन्नर समाज कि सामाजिक परिस्थिति मैं भी परिवर्तन आया। मध्यकाल में जो किन्नर समाज राजनीतिक सत्ता के शिखर पे बैठ प्रशासनिक दायित्वों का निर्वहन कर रहा था। वह किन्नर समाज आधुनिक काल में सामाजिक रूप से उपेक्षित होकर समाज का सबसे दमित वर्ग बन गया। थोडे बहुत सामाजिक कार्यों में किन्नरों की उपस्थिति थी, जिससे भी अंग्रेजों ने 1871 ई. में क्रिमिनल

ट्राइब एक्ट पारित कर किन्नरों कि सामाजिक स्वीकारिता को नष्ट कर दिया। इस एक्ट में किन्नरों को अपराधियों की सूची में डाल दिया गया था। अंग्रेजों का मानना था कि किन्नर समुदाय विभिन्न आपराधिक गतिविधियों में शामिल हैं।

आधुनिक काल में इस विरोधी नीतियों के कारण किन्नर समुदाय का पतन होना प्रारम्भ हो गया। प्राचीन व मध्यकाल में जो किन्नर समाज भारतीय समाज का हिस्सा था। राजनितिक कला के क्षेत्र में समृद्ध विरासत का स्वामी था व वर्तमान काल में अपनी पहचान के लिये संघर्ष कर रहा हैं।

संदर्भ सूची

1. गुप्ता ए. के. एवं अन्य , किन्नर हाशिए का जीवन, सन्मति पब्लिशर्स एण्ड डिस्ट्रीब्यूटर्स, हापुड (उ. प्र.) , पृ. 88
2. पट्टनायक देवदत्त, शिखण्डी और कुछ किन्नर कहानियॉ, राजपाल एण्ड सन्ज, दिल्ली, पृ. 118–119
3. उपरोक्त पृ. 48–50
4. बोलिच जी. जी., ट्रांसजेंडर हिस्ट्री एंण्ड जियोग्राफी , खंड 3 सयची प्रेस केरोलिना, पृ. 32–33
5. चौरासिया आर. एस., हिस्ट्री ऑफ मिडाइवल इंडिया फ्राम 1000 ए. डी. टु 1707 ए. डी., अटलांटिक पब्लिशर्स एण्ड डिस्ट्रीब्यूटर्स, नई दिल्ली, पृ. 35–37
6. दि इम्पीरियल गजेटियर ऑफ इंडिया वाल्यूम 14 पृ. 74
7. हिनचाये जेशिका, गवर्नर जेण्डर एंड सेक्सुआलिटी इन कोलोनिकल इंडिया दि हिजड़ा 1850–1900, केम्बिज युनिवर्सीओ प्रेस, पृ. 18

■ ■ ■